विशाखा सखि, सखियन सरदार ।
दामिनि-दुति सम गौर कलेवर, दमकत सुषमा सार ।
पहिरे वसन मनोहर मोहति, तारागन अनुहार ।
रंग बिरंगे वसन पिन्हावति, सदा युगल सरकार ।
जनु प्रतिबिंब सम्ग श्यामा के, रात दिवस इकसार ।
जानत सबै 'कृपालु' रीति-रस, प्यारी सों अति प्यार ॥

भावार्थ - विशाखा सखि सब सखियों की सरदार के समान हैं । उनका गोरा शरीर बिजली के समान चमकता रहता है । नीले आसमान के तारों से युक्त रंग का कपड़ा पहनती हैं । प्रिया-प्रियतम को रंग-बिरंग कपड़े पहनाती हैं । रात-दिन किशोरी जी के साथ परछाई के समान रहती हैं । **'कृपालु'** कहते हैं कि ये प्रेम-रस की समस्त रीतियों को जानती हैं तथा किशोरी जी से अधिक प्यार करती हैं ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्